बोल अरी ओ धरती बोल

व अन्य गीत

प्रतिध्वनि

बोल अरी ओ धरती बोल
व अन्य गीत

संकलन: प्रतिध्वनि, दिल्ली
चित्र: प्रागैतिहासिक शैलचित्र

पहला संस्करण: मार्च, 1995/3000 प्रतियाँ
प्रथम पुनर्मुद्रण: जनवरी,1998/3000 प्रतियाँ
दूसरा पुनर्मुद्रण: मार्च, 2001/5000 प्रतियाँ
तीसरा पुनर्मुद्रण: मार्च, 2010/3000 प्रतियाँ
चौथा पुनर्मुद्रण: फरवरी, 2017/2000 प्रतियाँ
कागज़ 70 gsm मेपलिथो एवं 150 gsm आर्टकार्ड कवर
ISBN: 978-81-87171-10-2
मूल्य: ₹ 22.00

प्रकाशक: **एकलव्य**
ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोन: +91 755 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल,
फोन: +91 755 2687 589

कुछ बातें

बात सन् 1978 की है। दिल्ली स्थित जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुछ छात्रों ने एक ग्रुप बनाया - नाम रखा प्रतिध्वनि। इस छोटे से ग्रुप के लोग एक छोटा-सा प्रयास कर रहे थे - ये लोग साथ मिलकर गीत गाना चाहते थे। गीत तो हम सब गाते हैं लेकिन इनके मन में एक खास बात थी। ये लोग ऐसे गीत गाना चाहते थे जो आम लोगों के सपनों और अरमानों से जुड़े हों। इसीलिए इन्होंने फैज़ अहमद फैज़ और साहिर लुधियानवी जैसे कवियों के गीत गाए। इन गीतों में गरीबी, बेरोज़गारी और ज़ुल्म के खिलाफ आवाज़ उठाई गई है।

प्रतिध्वनि के साथी एक और महत्वपूर्ण कोशिश कर रहे थे। हमारे देश के गांवों में खूबसूरत गानों की एक विकसित परंपरा है। ये लोक-गीत सैकड़ों-हज़ारों वर्षों से गाए जाते रहे हैं। लोगों की ज़ुबान से नाचते, लुढ़कते, गिरते हुए इन गीतों में बच्चों की सी सरलता है।

पिछले तीस-चालीस वर्षों में फिल्म के संगीत का प्रभाव बढ़ा है। गांवों में शादी-ब्याह, पर्व-त्यौहार आदि के अवसर पर लोग अब खुद गीत नहीं गाते, बल्कि लाऊडस्पीकर पर फिल्मी गीत बजाते हैं। धीरे-धीरे लोग अपने गीत भूलने लगे हैं। लोग यदि अपने गीत भूल जाएं, अपनी संस्कृति भूल जाएं तो वे एक ऐसी 'मूक संस्कृति' के युग में प्रवेश करेंगे जहां वे अपना दुख और सुख भी सिर्फ बंबई की फिल्मों की भाषा में व्यक्त कर पायेंगे। फिल्मों में भी बहुत से खूबसूरत गीतों की रचना हुई है - लेकिन उनका एक विशेष संदर्भ है - एक शहरी उपभोक्तावादी और दिखाऊ संस्कृति का। इन गीतों के प्रसार का कारण सिर्फ उनकी

खूबसूरती ही नहीं रही है। शायद ज़्यादा बड़े कारण रहे हैं : एक शक्तिशाली वर्ग द्वारा अत्याधुनिक संयंत्रों से इनका प्रचार।

लोक गीतों में गांव की मिट्टी का सोंधापन है और वे हज़ारों भाषाओं में लोगों के अपने सहज और अच्छे-बुरे अनुभवों को व्यक्त करते रहे हैं। प्रतिध्वनि के दोस्तों ने जब इन गीतों को इकट्ठा करना शुरू किया तब उन्हें एक नई बात समझ में आई - तमाम गीत जहां आम लोगों के दर्द और संघर्ष की कहानी कहते हैं वहीं दूसरे गीत उनकी खुशी, उम्मीद और जीवन के प्रति उनकी सकारात्मक मनोवृत्ति को दर्शाते हैं। इसीलिए लोकगीत प्रगतिशील हैं।

प्रस्तुत संग्रह में हिन्दी गीतों के अलावा तेलुगु, असमिया और बांग्ला जैसी भाषाओं के गीत भी रखे गए हैं। प्रतिध्वनि एक छोटा-सा प्रयास है। उम्मीद यह है कि इस संकलन को पढ़ने वाला हरेक पाठक एक बार फिर अपने गांव और परिवेश के गीतों को गाना, गुनगुनाना और इकट्ठा करना शुरू कर देगा और शुरुआत होगी एक नई समझ की।

पुनश्च :

जो गीत हिन्दी भाषा के नहीं हैं उनको लेकर एक समस्या थी - उन भाषाओं के शब्दों को देवनागरी लिपि में सही-सही लिखना संभव नहीं। जैसे कि बांग्ला, उड़िया आदि में 'अ' और 'ओ' के बीच के कई उच्चारण होते हैं। तेलुगु में शब्दों का अन्त 'अ' और आ के बीच के उच्चारण से होता है। इन कारणों से गीतों में थोड़ी अशुद्धियां नज़र आ सकती हैं और उन्हें सुधारने का एकमात्र उपाय है उस भाषा को बोलने वाले व्यक्ति से गीत गवाना और गवाना। फिलहाल हम कम से कम गाना तो गाएं - गलत ही सही।

गीतों की सूची

हिन्दुस्तानी गीत

मिल के चलो 1
जागा सारा संसार 2
घुमड़ आए बदरा 3
हो सावधान आया तूफान 4
अब जाग उठो 5
जंग-ए-आज़ादी 6
क्रांति के लिए उठे कदम 7
नैया पार लगा 8
काली नदी को करें पार 9
तुम्हें वतन पुकारता 10
ज़िंदगी की जीत में यकीन कर 11
बोल अरी ओ धरती बोल 12
वो सुबह कभी तो आएगी 14
तुम्हारे हाथ 16
बुनियाद हिलनी चाहिए 17
नीग्रो भाई हमारे पॉल रॉबसन 18
तुम को शहीदों भूले नहीं हम 19
दरबारे वतन 20
आंधा आकाश नारी है 21
इंटरनेशनल 22
हम होंगे कामयाब 23
दूर तक यादे वतन आई थी समझाने को 24
ये किसका लहू है कौन मरा 25

भोजपुरी गीत

नदिया के पार 26
अजदिया हमरा के भावेले 28
सपन एक देखलीं 29
समाजवाद धीरे धीरे आई 30
जोर जालिम ससनवा हम जान गइलीं 31
रउरा शसना के बाटे ना जवाब 32

छत्तीसगढ़ी गीत

सावन के महीने में 33
बादर बनगे दानी 34
हाय कहे कजरी 35

पहाड़ी गीत

तू मालू न काटा मालू रे 36
पैला जनम मा 37
बेडु पाको बारोमासा 38

राजस्थानी गीत

अंजन की सीटी में म्हारो मन डोले 39

बांग्ला गीत

दोला हे दोला 40
शुन्दोइरा नाउयेर मांझी 41
कालो नदी के होबि पार 42
शोनार बांधाली नाउ 43
ओ आलोर पथोजात्री 44
उज्जलो दिन डाके 45
आकाशो लाल 46
बाईयोरे नाउ बाइयो 47
हेइ सम्भालो धान हो 48
गंगा बहिछो कैनो 49
जो हिल बेंचे आछे 50
लालन की जात 52

असमिया गीत

मेघे गिरगिर कौरे 53
आसाम देसे रे मैनी 54

उड़िया गीत

ए भरा चांदनी रे 55
मजदुर भाई साज रे 56
चलिबनि आउ 57
बाजि गलान ढुल मुहुरी रे 58

तेलुगु गीत

भूमि कोसम भुक्ति कोसम 59
रेला रे . . . 60
संदामामा 62
कोण्डलू पगलेसिनम 64

आदिवासी बोली के गीत

मुलूके नाहि मिले काम 65
चाल कांध हातुरे जनम लेनम बिरीसा 66

मिल के चलो

ये वक्त की आवाज़ है मिल के चलो
ये ज़िन्दगी का राज़ है मिल के चलो
चलो भाई, मिल के चलो - 3

आज दिल की रंजिशें मिटा के आ . . .
आज भेद-भाव सब भुला के आ . . .
आज़ादी से है प्यार जिन्हें देश से है प्रेम
कदम-कदम से और दिल से दिल मिला के आ . . .
मिल के चलो . . .

जैसे सुर से सुर मिले हों राग के
जैसे शोले बन के बढ़ें आग के
जिस तरह चिराग से जले चिराग
ऐसे चलें भेद तेरा मेरा त्याग के।
मिल के चलो . . .

ये भूख क्यूं ये ज़ुल्म का ये ज़ोर क्यूं
ये जंग-जंग-जंग का है शोर क्यूं
हर इक नज़र बुझी-बुझी हरेक दिल उदास
बहुत फरेब खाए हम और फरेब क्यूं।
मिल के चलो . . .

● प्रेम धवन

कवि प्रेम धवन इप्टा में सक्रिय थे। इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन (इप्टा) की स्थापना चालीस के दशक में हिन्दुस्तान भर के कुछ संवेदनशील कलाकारों ने की थी।

(अगले पृष्ठ पर जारी)

जागा सारा संसार

ओ, जागा रे जागा रे जागा सारा संसार
फूटी किरण लाल खुलता है पूरब का द्वार
ओ, जागा रे . . .

अंगड़ाई लेती ये धरती उठी है
सदियों की ठुकराई मिट्टी उठी है
ओ, टूटे हो टूटे गुलामी के बन्धन हज़ार

ओ, जागा रे . . .
आया ज़माना हो अपना ज़माना
किस्मत का ये रोना गाना पुराना
ओ, बदलेंगे हम अपने जीवन की नदिया की धार
ओ, जागा रे . . .

हर भूखा कहता है यूं न मरूंगा
मैं जा के मालिक को नंगा करूंगा
ओ, ढहा दूंगा दुखियारी लाशों पे उट्ठी दीवार
ओ, जागा रे जागा रे जागा सारा संसार

● इप्टा

(पिछले पृष्ठ से)
अंग्रेज़ों के शासन के दौरान भारतीय कला और संस्कृति का पतन हो गया था। इप्टा के कलाकार कला को जन-संस्कृति से जोड़ना चाहते थे। उनका मानना था कि कला तभी रचनात्मक हो सकती है जब वह आम लोगों के जीवन से जुड़ जाए। अंग्रेज़ों और अमीर तबकों के खिलाफ जो जन-आंदोलन इस काल में उभरे उनमें भी इप्टा के लोगों ने हिस्सा लिया। इप्टा के कई
(अगले पृष्ठ पर जारी)

घुमड़ आए बदरा

माझी रे . . . साथी रे . . .
घुमड़ आए बदरा माझी रे
घुमड़ आए बदरा साथी रे
ओ हो हो . . .

उमड़ा सागर ढलता सूरज
सांझ की बेला आई, हैया रे हैया
अंधियारे ने जाल बिछाया
सांझ की बदरी छाई, हैया रे हैया
घुमड़ आए बदरा . . .

छोड़ न देना धीरज साथी
तोड़ न मन की आशा, हैया रे हैया
पल दो पल की बात है साथी
पास है घोर निराशा, हैया रे हैया
घुमड़ आए बदरा . . .

● इप्टा

(पिछले पृष्ठ से)
सदस्य तत्कालीन कम्युनिस्ट पार्टी से भी जुड़े हुए थे। इप्टा के सदस्य गांवों में, कल-कारखानों के सामने अपने नाटक और गीत प्रस्तुत करते थे।

ऋत्विक घटक और उत्पल दत्त जैसे फिल्म निर्देशक, सलिल चौधरी, हेमन्त कुमार और रविशंकर जैसे संगीतकार, साहिर लुधियानवी और कैफी आज़मी जैसे कवि और बलराज साहनी जैसे कलाकार इप्टा से जुड़े हुए थे। आज के कई प्रचलित जनगीत इप्टा की ही देन हैं। ●

हो सावधान आया तूफान

हो सावधान आया तूफान
पर दूर नहीं है किनारा
हम ही मुसाफिर हम ही खिवैया
हम सब हिम्मत वाले
निकल पड़े हैं मौजों से खेलने
देशभक्त मतवाले
वीर बढ़ चलो धीर धर चलो
चीर चपल जलधारा

है भय कोई? कोई भय नहीं
है डर कोई? कोई डर नहीं
फिर दूर नहीं है किनारा - 3
अजगर बन के गरज रहा है
सागर बाधाओं का
एक हैं हम तो चमक रहा है
तारा आशाओं का
वीर बढ़ चलो, धीर धर चलो . . .

साम्राज्य के छल से लड़ो
आज़ादी की खातिर
खूनी चंचल दल से लड़ो
आज़ादी की खातिर
वीर बढ़ चलो धीर धर चलो
चीर चपल जलधारा

● इप्टा

अब जाग उठो

अब जाग उठो तैयार हो लख कोटी भाईयों
हम भूख से मरने वाले न मौत से डरने वाले
आज़ादी का डंका बजाओ उठाओ लाल निशान
ये एकता की पुकार आती है बार-बार
हो तैयार हो तैयार
मज़दूर होशियार ओ किसान होशियार
मालिक के अत्याचार अब नहीं करेंगे स्वीकार
होशियार होशियार होशियार

● इप्टा

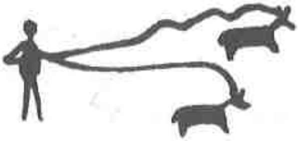

फ्रांसीसी क्रांति के गीत की धुन पर आधारित ये गाना दुनिया भर में मशहूर है और इसे अलग-अलग भाषाओं में, लेकिन उसी धुन में गाया जाता है। ●

जंग-ए-आज़ादी

ये जंग है जंग-ए-आज़ादी आज़ादी के परचम के तले
हम हिन्द के रहने वालों की महकूमों की, मज़लूमों की
आज़ादी के मतवालों की
दहकानों की, मज़दूरों की।

सारा संसार हमारा है,
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण
हम अफरंगी हम अमरीकी
हम चीनी जावा जान-ए-वतन
हम सुर्ख़ सिपाही ज़ुल्म शिकन
आहन पै कर फौलाद बदन।
ये जंग है जंग-ए-आज़ादी . . .

वो जंग ही क्या वो अमन ही क्या
दुश्मन जिसमें ताराज़ न हो
वो दुनिया दुनिया क्या होगी
जिस दुनिया में स्वराज न हो
वो आज़ादी आज़ादी क्या
मज़दूर का जिसमें राज न हो।
ये जंग है जंग-ए-आज़ादी . . .

लो सुर्ख़ सवेरा आता है आज़ादी का आज़ादी का
गुलनार तराना गाता है आज़ादी का आज़ादी का
देखो परचम लहराता है आज़ादी का आज़ादी का
ये जंग है जंग-ए-आज़ादी . .

● मख़दूम मोहिउद्दीन

इस गाने के रचनाकार आन्ध्र प्रदेश के मख़दूम मोहिउद्दीन हैं। आप उर्दू के मशहूर कवि और सक्रिय राजनैतिक कार्यकर्ता थे। आपने तेलंगाना के किसान विद्रोह में हिस्सा लिया था। ●

क्रान्ति के लिए उठे कदम

क्रान्ति के लिए उठे कदम
क्रान्ति के लिए जले मशाल।

भूख के विरुद्ध भात के लिए
रात के विरुद्ध प्रात के लिए
ज़ुल्म के खिलाफ जीत के लिए
हम लड़ेंगे हमने ली कसम।

छिन गई हैं आदमी की रोटियां
बिक गई हैं आदमी की बोटियां
किन्तु दुष्ट भर रहे हैं कोठियां
लूट का ये राज हो खतम।

● शंकर शैलेन्द्र

नैया पार लगा

अब मचल उठा है दरिया
अब सर पर घिरी बदरिया
उनचास पवन डोले झंझा की बजे बसुरिया
नैया पार लगा हो नैया पार लगा।

ओ भंवर हज़ारों गहरी धारा, गहरी धारा
मंज़िल का है दूर किनारा, दूर किनारा
ओ भटक न जाना काली रात खिवैया।
हो नैया पार. . .

ओ निर्बल चप्पु डरना कैसा, डरना कैसा
तन में दम हो तो ग़म कैसा, तो ग़म कैसा
ओ उम्मीदों के पाल उड़ा खिवैया।
हो नैया पार. . .

सुबह सुहानी तुझे पुकारे, तुझे पुकारे
साहिल तेरी राह निहारे, राह निहारे
ओ सपने सुहाने सच होंगे खिवैया।
हो नैया पार लगा. . .

● इप्टा

काली नदी को करें पार

ओ मेरे देशवासी रे
आओ रे राम भाई आओ रहीम भाई
काली नदी को करें पार।

बीच इस देश के
शैतान ले आए हैं दंगे फसादों की बाढ़
डूबा सैलाब में सारे वतन का मान
हेई! नफरत की नदी पर पुल हों गर बांधने
ले गैंती और औज़ार।
हे हेंइयां ओ हेंइयां
बांधो सेतु जवानों इस बार।

नदिया ये हम सब के खून का दरिया। हेंइयां. . .
नदिया ये हम सब के अश्कों का दरिया। हेंइयां. .
नदिया ये हम सब के दर्दों का दरिया। हेंइयां. . .
दोनों किनारों से हाथ हम बढ़ाएं। हेंइयां. . .
नदिया के दलदल में घड़ियाल छुपे हैं
छीने सुख चैन उजाड़ें घर बार। हेंइयां. . .
ओ मेरे देशवासी रे. . .
हेंइयां हो मार जोड़ बांध सेतु बांध रे
बांध सेतु बांध रे - 4

लेके हाथों में हाथ बढ़ें हम साथ-साथ भाई रे
हेंइयां हो मार जोर. . . 2
दुश्मन की चालों को एकता की ठोकर से तोड़ें रे
हेंइयां हो. . .
छोड़ भेदभाव समता का देश बनाएं रे।

● सलिल चौधरी

तुम्हें वतन पुकारता

तुम्हें वतन पुकारता वतन तुम्हारा नौजवान
जागे हैं वतन के लोग जागा है सारा जहां
आ. . . वतन तुम्हारा नौजवान।

बीत गए यूं ही तो बहुत दिन
वक्त मांगे एकता विभेदहीन
तुम्हारा प्रण मेरा यतन जगाएगा नवचेतना
पुकारता. . . आ. . . वतन तुम्हारा नौजवान।

कभी तो आएगा वो दिन सुबह
मुस्कुरायेगी नहीं है डर
चिराग जले ये रात ढले
ढले ये ग़म के चार दिन।

कभी तो आएगा समीर झूमके
खिलेंगे सौ फूल उसे चूमके
सदियों से जो सोये हैं अंगड़ाई लेके उठेंगे
पुकारता. . . आ. . . वतन तुम्हारा नौजवान।

● सलिल चौधरी

मूल बांग्ला। हिन्दी रूपान्तर प्रतिध्वनि। ●

ज़िंदगी की जीत में यकीन कर

तू ज़िन्दा है तो ज़िन्दगी की जीत में यकीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर।

सुबह शाम के रंगे हुए गगन को चूमकर
तू सुन ज़मीन गा रही है कब से झूम-झूमकर
तू आ मेरा श्रृंगार कर तू आ मुझे हसीन कर
अगर कहीं है. . .

हज़ार भेष धर के आई मौत तेरे द्वार पर
मगर तुझे न छल सकी चली गई वो हारकर
नई सुबह के संग सदा तुझे मिली नई उमर
अगर कहीं है. . .

ये ग़म के और चार दिन सितम के और चार दिन
ये दिन भी जाएंगे गुज़र गुज़र गए हज़ार दिन
कभी तो होगी इस चमन में भी बहार की नज़र
अगर कहीं है. . .

● इप्टा

बोल अरी ओ धरती बोल

बोल अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डांवाडोल

बादल बिजली रैन अंधियारी
दुख की मारी परजा सारी
बच्चे बूढ़े सब दुखिया हैं
दुखिया नर हैं दुखिया नारी
बस्ती बस्ती लूट मची है
सब बनिये हैं सब व्योपारी।

बोल अरी ओ. . .

क्या अफरंगी क्या तातारी
आंख बची और बरछी मारी
कब तक जनता की बेचैनी
कब तक जनता की बेज़ारी
कब तक सरमाये के धन्धे
कब तक ये सरमायादारी।

बोल अरी ओ. . .

नामी और मशहूर नहीं हम
लेकिन क्या मज़दूर नहीं हम
धोखा और मज़दूरों को दें
ऐसे तो मजबूर नहीं हम
मंज़िल अपने पांव के नीचे
मंज़िल से अब दूर नहीं हम।

बोल अरी ओ. . .

(अगले पृष्ठ पर जारी)

बोल कि तेरी खिदमत की है
बोल कि तेरा काम किया है
बोल कि तेरे फल खाये हैं
बोल कि तेरा दूध पिया है

बोल कि हमने हश्र उठाया
बोल कि हमसे हश्र उठा है
बोल कि हमसे जागी दुनिया
बोल कि हमसे जागी धरती।

बोल अरी ओ. . . .

● **मजाज़ लखनवी**

इप्टा से जुड़े हुए लखनऊ के मशहूर शायर।
धुन - प्रतिध्वनि। ●

वो सुबह कभी तो आएगी

इन काली सदियों के सर से
जब रात का आंचल ढलकेगा
जब दुख के बादल पिघलेंगे
जब सुख का सागर छलकेगा
जब अम्बर झूम के नाचेगा
जब धरती नग़में गायेगी
वो सुबह कभी तो आएगी - 2

बीतेंगे कभी तो दिन आख़िर
ये भूख के और बेकारी के
टूटेंगे कभी तो बुत आखिर
दौलत की इज़ारादारी के
जब एक अनोखी दुनिया की
बुनियाद उठाई जाएगी
वो सुबह कभी तो आएगी. . .

मनहूस समाजी ढांचों में
जब जुल्म न पाले जाएंगे
जब हाथ न काटे जाएंगे
जब सर न उछाले जाएंगे
जेलों के बिना जब दुनिया की
सरकार चलाई जाएगी
वो सुबह कभी तो आएगी. . .

(अगले पृष्ठ पर जारी)

संसार के सारे मेहनतकश
खेतों से मिलों से निकलेंगे
बेघर, बेदर, बेबस इन्सान
तारीक बिलों से निकलेंगे
दुनिया अमन, खुशहाली के
फूलों से सजाई जाएगी
वो सुबह कभी तो आएगी. . .

● साहिर लुधियानवी

साहिर (1912-80) स्वतंत्रता और कम्युनिस्ट आंदोलन से जुड़े थे। बाद में हिन्दी फिल्मों के लिए बहुत से खूबसूरत गीत लिखे। प्रतिध्वनि ने भी इस गीत की धुन बनाई है। ●

तुम्हारे हाथ

तुम्हारे हाथ पत्थरों की तरह संगीन हैं
जेल में गाए गए गीतों की तरह उदास हैं
बोझ ढोने वाले पशुओं की तरह
सख़्त हैं सख़्त हैं सख़्त हैं
तुम्हारे हाथ भूखे बच्चों के तमतमाये
चेहरों की तरह हैं
तुम्हारे हाथ मधुमक्खियों की तरह दक्ष हैं
ये जहां तुम्हारे हाथों पर नाचता रहता है
ये जहां।

तुम्हारे हाथ. . .

आ मेरे लोगों आ मेरे लोगों
यूरोप के लोगों अमरीकी लोगों
सारी दुनिया के लोगों, तुम सतर्क हो, हिम्मती हो
फिर भी अपने हाथों की तरह खोए हुये हो
फिर भी तुम परबशी बनाये जाते रहे हो।
आ मेरे लोगों आ मेरे लोगों

तुम्हारे हाथ. . .

आ मेरे लोगों, आ मेरे लोगों
एशियाई लोगों अफ्रीकी लोगों
मध्य पूर्व के लोगों मेरे अपने देश के लोगों
तुम अपने हाथों की तरह घिसे हुए कठोर हो
तुम अपने हाथों की तरह तरोताज़ा युवा हो

तुम्हारे हाथ. . .

● नाज़िम हिकमत

नाज़िम हिकमत की मशहूर कविता जिसका सारी दुनिया में अलग-अलग भाषाओं में अनुवाद किया गया है। हिन्दी रूपान्तर - शिवमंगल सिद्धान्तकर। इस गद्य कविता की धुन

(अगले पृष्ठ पर जारी)

बुनियाद हिलनी चाहिए

हो गई है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गांव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

● दुष्यन्त कुमार

दुष्यन्त कुमार की इस गज़ल को धुनबद्ध किया है प्रतिध्वनि ने। ●

(पिछले पृष्ठ से)
बनाकर प्रतिध्वनि ने इसे गाने के रूप में सजाया है। नाज़िम हिकमत (1902-63) तुर्की भाषा के मशहूर कवि थे। वे वहां के कम्युनिस्ट आंदोलन से जुड़े रहे थे। इस सिलसिले में वहां की सरकार ने उन्हें कई बार जेल में रखा। 1950 में जेल से रिहाई के बाद उन्हें देश छोड़ने को मजबूर होना पड़ा। ●

नीग्रो भाई हमारे पॉल रॉबसन

वो हमारे गीत क्यों रोकना चाहते हैं
नीग्रो भाई हमारे पॉल रॉबसन।
हम अपनी आवाज़ उठा रहे हैं
वो नाराज़ क्यों - 2
नीग्रो भाई हमारे पॉल रॉबसन।
वो डरते हैं ज़िन्दगी से, वो डरते हैं मौत से,
वो डरते हैं इतिहास से,
वो डरते हैं, रॉबसन।
हमारे ये कदमों से डरते हैं
जनता की ये चेतना से डरते हैं, रॉबसन
वो क्रान्ति के जय-डम्बरू से डरते हैं, रॉबसन
नीग्रो भाई हमारे पॉल रॉबसन।

● नाज़िम हिकमत

मूल रचना तुर्की भाषा में है।

पॉल रॉबसन (1898-1976) अमरीका में एक गरीब अश्वेत परिवार में जन्मे थे। उन्होंने आजीवन अश्वेत लोगों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। उन्होंने अपने गायकी जीवन की शुरुआत एक अश्वेत लोक-गीत गायक के रूप में की।

1936-39 में स्पेन में फासीवाद के उत्थान के खिलाफ एक अन्तर्राष्ट्रीय मुहिम छिड़ी थी जिसमें कई देशों के युवाओं ने हिस्सा लिया। अमरीका के अन्य युवाओं के साथ रॉबसन भी स्पेन गए और वहां उन्होंने फासिस्टों के खिलाफ कई कार्यक्रम चलाएं।

उस समय तक वे बीस भाषाओं में गीत गाते थे और संपूर्ण विश्व में मानवीयता के संघर्ष के प्रतीक बन गए। गरीबों और अश्वेतों पर अत्याचार के खिलाफ उनके वक्तव्यों ने अमरीकी सरकार को नाखुश कर दिया जिस कारण उनके अपने देश में ही उनके आने पर रोक लगा दी गई।

इस प्रतिबन्ध के खिलाफ तुर्की के क्रान्तिकारी कवि नाज़िम हिकमत ने यह गाना लिखा। ●

तुम को शहीदों भूले नहीं हम

तुम को शहीदों
भूले नहीं हम
भूली नहीं संग्रामी जनता
भूला नहीं रक्त-रंजित लाल निशान
भूली नहीं विप्लवी क्षमता।

व्यर्थ न होगा रक्त तेरा जलेगा विद्रोही सीने में
इस लहू से रंगी छटा खिल उठी सूर्योदय में।
तुम को शहीदों. . .

कसम ली है होगा पूरा प्रतिशोध हमारा महान
न सहा न सहेंगे और अब हम
तेरा ये अपमान।
तुम को शहीदों. . .

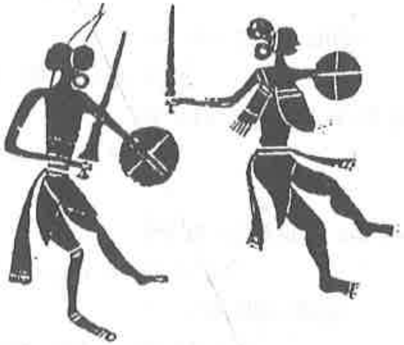

बांग्ला रचना का हिन्दी अनुवाद - प्रतिध्वनि। बंगाल में साठ के दशक के दौरान चले क्रान्तिकारी आंदोलन में गाया जाने वाला एक गीत। ●

दरबारे वतन

दरबारे वतन में जब इक दिन,
सब जाने वाले जाएंगे।
कुछ अपनी सज़ा को पहुंचेंगे,
कुछ अपनी जज़ा ले जाएंगे।

ऐ ख़ाकनशीनों उठ बैठो,
वो वक्त करीब आ पहुंचा है।
जब तख़्त गिराये जाएंगे,
जब ताज उछाले जाएंगे।

अब टूट गिरेंगी ज़ंजीरें,
अब ज़िन्दानों की खैर नही।
जो दरिया झूम के उठ्ठे हैं,
तिनकों से न टाले जाएंगे।

ऐ जुल्म के मातो लब खोलो,
चुप रहने वालो चुप कब तक।
कुछ हश्र तो उनसे उठ्ठेगा,
कुछ दूर तो नाले जाएंगे।

कटते भी चलो बढ़ते भी चलो,
बाजू भी बहुत हैं सर भी बहुत।
चलते ही चलो कि अब डेरे,
मंज़िल ही पे डाले जाएंगे।

● **फैज़ अहमद फैज़**

फैज़ अहमद फैज़ (1911-87), इस शताब्दी के सर्वश्रेष्ठ उर्दू शायरों में एक नाम। उन्होंने पाकिस्तानी तानाशाहों के खिलाफ आजीवन संघर्ष किया। ●

आधा आकाश नारी है

वो है अनगिनत तारों का आधा
नारी उठाये आधा आकाश, शेष पुरुष संसार
आधा आकाश नारी है।

विद्रोह के संगीत में नर है स्वर संगीत
और नारी है ताल।
नर नारी के एक साथ संघर्ष का नाम है तूफान
दोनों के एक संग जीत का वो है सही निशान
नारी उठाये आधा. . .

एक साथ मिलते हैं जब इंकलाब की राह पर
एक साथ बढ़ते हैं जब इंकलाब की राह पर
हमारा नाम त्याग है ये ज़मीं संग्रामी है
हमारा नाम त्याग है।

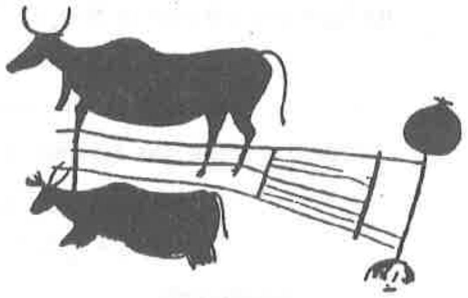

मूल तेलुगु रचना से हिन्दी रूपान्तर और धुन प्रतिध्वनि। ●

इंटरनेशनल

उठो जागो भूखे बंदी
अब खींचो लाल तलवार
कब तक सहेंगे भाई ज़ालिम के अत्याचार
हमारे रक्त से रंजित क्रंदन
अब दसों दिशा लाल रंग
सौ-सौ बरस का बंधन एक साथ करेंगे भंग
ये अंतिम जंग है जिसको जीतेंगे हम एक साथ
गाओ इंटरनेशनल भव स्वतंत्रता का गान।

● यूजीन पोतिए

सन् 1871 में फ्रांस के शासकों ने जर्मनी की सेनाओं के सामने आत्म-समर्पण कर दिया। पेरिस के आम लोगों ने अपनी सरकार का यह निर्णय अस्वीकार कर दिया। इन लोगों ने पेरिस कम्यून बनाई और अपनी आत्म-रक्षा का प्रयत्न किया। उन्होंने समानता और पारस्परिक सहयोग पर आधारित एक समाजवादी व्यवस्था लाने की कोशिश की। फ्रांस के शासकों ने जर्मनी की सहायता से हज़ारों मज़दूरों की हत्या करके पेरिस कम्यून को समाप्त कर दिया। इस लम्बी लड़ाई की हार के क्षणों में यह गीत रचा गया। गीत में कम्यून के संघर्ष और उसकी आकांक्षाओं को सामने लाने की कोशिश की गई है। यह गीत बाद में 'इंटरनेशनल' के नाम से जाना गया। अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन इसे अपना गीत मानता है। ●

हम होंगे कामयाब

हम होंगे कामयाब एक दिन
हो हो मन में है विश्वास पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन।

हम चलेंगे साथ-साथ डाले हाथों में हाथ
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन।

नहीं डर किसी का आज के दिन
हो हो मन में है. . .
नहीं डर किसी का आज के दिन।

होगी शान्ति चारों ओर एक दिन
हो मन में है विश्वास. . .
होगी शान्ति चारों ओर एक दिन।

अमरीका के अश्वेत नेता मार्टिन लूथर किंग (1929-1968) का गीत। मार्टिन लूथर 60 के दशक में अश्वेत लोगों के अधिकारों के जुझारु साथी बन कर उभरे।

वे चर्च से जुड़े थे और गांधीवादी अहिंसात्मक आंदोलन में विश्वास रखते थे। उनके नेतृत्व में अश्वेतों ने अमरीकी सरकार की रंगभेद नीति के खिलाफ मानवाधिकार आंदोलन छेड़ा। इस संघर्ष के दौरान उन्हें जेल में डाला गया, उनके घर पर बम फेंके गए, और उन्हें तरह-तरह से सताया गया। अन्ततः 1968 में गोली मारकर उनकी हत्या कर दी गई। यह गीत उनके अरमानों और सपनों का गीत है जिसे दुनिया भर के जन-आंदोलनों ने अपना लिया।

दूर तक यादे वतन आई थी समझाने को

हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रहकर
हमें को भी पाला था मां-बाप ने दुख सह सहकर
वक़्ते रुख़सत उन्हें इतना भी न आए कहकर
गोद में आंसू जो टपके कभी रुख से बहकर
तिफ़्ल उनको ही समझ लेना जी बहलाने को

नौजवानों जो तबीयत में तुम्हारी खटके
याद कर लेना कभी हमको भी भूले भटके
आपके अज़्वे बदन होवें जुदा कट कट के
और सर चाक हो माता का कलेजा फटके
पर न माथे पे शिकन आए कसम खाने को

अपनी किस्मत में अज़ल से ही सितम रख्खा था
रंज रख्खा था, महन रख्खा था, ग़म रख्खा था
किस को परवाह थी और किस में यह दम रख्खा था
हमने जब वादिए गुर्बत में कदम रख्खा था
दूर तक यादे वतन आई थी समझाने को

अपना कुछ ग़म ही नहीं पर यह ख्याल आता है
मादरे हिन्द पे कब तक ये ज़वाल आता है
देश आज़ादी का कब हिन्द में साल आता है
कौम अपनी पे तो रह रह के मलाल आता है
मुन्तज़िर रहते हैं हम ख़ाक में मिल जाने को

● रामप्रसाद बिस्मिल

ये किसका लहू है कौन मरा

ऐ रहबरे मुल्को कौम बता
आंखें तो उठा नज़रें तो मिला
कुछ हम भी सुनें हम को भी बता
ये किसका लहू है कौन मरा।

धरती की सुलगती छाती पर
बेचैन शरारे पूछते हैं
हम लोग जिन्हें अपना न सके
वे खून के धारे पूछते हैं
सड़कों की जुबां चिल्लाती है
सागर के किनारे पूछते हैं।
ये किसका . . .

ऐ अज़्मे फना देने वालो
पैग़ामे वफा देने वालो
अब आग से क्यूं कतराते हो
मौजों को हवा देने वालो
तूफान से अब क्यूं डरते हो
शोलों को हवा देने वालो
क्या भूल गए अपना नारा।
ये किसका . . .

हम ठान चुके हैं अब जी में
हर ज़ालिम से टकरायगे
तुम समझौते की आस रखो
हम आगे बढ़ते जाएंगे
हम मंज़िले आज़ादी की कसम
हर मंज़िल पे दोहरायेंगे।
ये किसका . . .

● साहिर लुधियानवी

नदिया के पार

नइया लगाव तनी भइया हो मलहवा
जाए के बा नदिया के पार
उहे बाटे लउकत धुंधर दियरवा
जहां बाटे घरवा हमार
नदी का किछरवा बसल मोर गइयां
जंहवा बितल भइया मोर लइकइयां
पेटवा के जरल धइनी कलकतिया
बिपती में केहू नाहीं होखेला संघतिया
पंचवे बरिस पर जात बानी घरवा
धरकत मनवा हमार। नइया लगाव. . .

बुढ़वा हो गइनी हम करिके नौकरिया
तबहूं त रहि गइल सुखवा सपनवां
पंतिया लिखाई इया भेजे कलपनवां
फिकिर से तड़फत रहत परनवां
बाड़ी मोर इयवा बेमार। नइया लगाव. . .

हमहूं बेहाल नाही छूटत जड़इया
साथवा में बाटे खाली लाई के गंठरिया
धरनी हमार उहां करे मजदूरिया
रोई रोई पेन्हे एगो झिरकुट सड़िया
गिरल बुझात मोर टुटही मरइया
कइसे ई बेड़ा होई पार। नइया लगाव. . .

(अगले पृष्ठ पर जारी)

दउरल आई नब नन्हका लइकवा
मांगे लागी जब लाल भगई वो मीठवा
फाटि जइहें भइया मोर पथर करेजवा
अंखिया में लोर नाहीं बचल धीरजवा
चारू ओर भइल अन्हार ना सूझत किछु
नइया पड़ल मझधार। नइया लगाव. . .

● बसंत कुमार

इस गीत में एक मज़दूर की ज़िंदगी का चित्रण किया गया है। गांव से भागकर वह कलकत्ता जाता है। लेकिन वहां भी घोर परिश्रम के बावजूद उसकी गरीबी बनी रहती है। वह मलेरिया का शिकार हो गया है। बरसों बाद गांव वापस जा रहा है लेकिन उसके पास एक गठरी के अलावा कुछ नहीं है। ●

अजदिया हमरा के भावेले

गुलमियां अब हम नाहीं बजइबो
अजदिया हमरा के भावेले
झीनी-झीनी बीनी चदरिया
लहरेले तोहरे कान्हे हो लहरेले
जब हम तन के परदा मांगी
आवे सिपहिया बान्हे
सिपहिया से अब नाहीं बन्हइबो
चदरिया हमरा के भावेले।

कंकड़ चुनि-चुनि महल बनवली
हम भइली परदेसी हो
तोहरे कनुनियां मारल गइली
कहवो भईल ना पेसी
कनुनियां ऐसन हम नाहीं मनबो
महलिया हमरा के भावेले।

दिनवा खदनिया से सोना निकलली
रतिया लगौलीं अंगूठा हो
सगरो जिनगिया करज में डूबलि
कइली हिसबवा झूठा
जिनगिया अब हम नाहीं डुबइबो
अछरिया हमरा के भावेले।

हमरे जंगरवा से धरती फुलाली
फुलवा में खुशबू भरेले हो
हमके बंधुकिया से कइली बेदखली
तोहरे मालिकइ चलेले
धरतिया अब हम नाहीं गंवइबो
बंधुकिया हमरा के भावेले।

● गोरख पाण्डेय

इस गाने में गुलामी, निरक्षरता और सामन्ती शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाई गई है। ●

सपन एक देखलीं

सूतल रहलीं सपन एक देखलीं
सपन मनभावन हो सखिया।
फूटली किरिनिया पूरब असमनवा
उजर घर आंगन हो सखिया।
अंखिया के नीरवा भईल खेत सोनवा
त खेत भईल आपन हो सखिया।
गोसैंयां के लठिया मुरइया अस तूरलीं
भगवली महाजन हो सखिया।
केहु नाहीं ऊंचा नींचा केहु का न भय नाहीं
केहु वा भयावन हो सखिया।
मेहनत माटी चारों ओर चमकवली
ढहल इनरासन हो सखिया।
बइरी पईसवा के रजवा मिटवलीं
मिलल मोर साजन हो सखिया।

● गोरख पाण्डेय

इस कविता में गांव की एक वधु का दर्द चित्रित किया गया है। एक दिन सपने में वो देखती है कि यह अंधेरी रात खत्म हो जाती है। एक नया ज़माना आता है जब खेत खलिहान उसके अपने हो जाते हैं और ज़मींदार वर्ग की पराजय हो जाती है। ●

गोरख पाण्डेय (1945-1989) भोजपुरी और हिन्दी के क्रान्तिकारी कवि थे। 1969 में वे किसान आंदोलन से जुड़े और उनकी कविताओं ने उन वेदनाओं-संघर्षों को मुखरता दी। प्रतिध्वनि को ये गीत उन्होंने स्वयं सिखाए थे। ●

समाजवाद धीरे धीरे आई

समाजवाद बबुआ धीरे-धीरे आई
हाथी से आई घोड़ा से आई
अंगरेजी बाजा बजाई
समाजवाद बबुआ धीरे-धीरे आई
समाजवाद उनके धीरे-धीरे आई

नोटवा से आई वोटवा से आई
बिरला के घर में समाई, समाजवाद. . .

कांग्रेस से आई जनता से आई
झंडा के बदली हो जाई, समाजवाद. . .

गांधी से आई आंधी से आई
टुटही मड़इयो उड़ाई, समाजवाद. . .

डालर से आई रूबल से आई
देसवा के बान्हे धराई, समाजवाद. . .

लाठी से आई गोली से आई
लेकिन अहिंसा कहाई, समाजवाद. . .

महंगी ले आई गरीबी ले आई
केतनो मजुरा कमाई, समाजवाद. . .

छोटका के छोटहन बड़का के बड़हन
हिस्सा बराबर लगाई, समाजवाद. . .

परसों ले आई बरसों ले आई
हरदम अकस्से तकाई, समाजवाद. . .

धीरे-धीरे आई ओ चुपे-चुपे आई
अंखियन पर परदा लगाई, समाजवाद. . .

● गोरख पाण्डेय

जोर जालिम ससनवा हम जान गइलीं

जोर जालिम ससनवा हम जान गइलीं
चले उलटा विधनवा हम जान गइलीं
बेलछी में बांह कटल पीपरा में तनवा
हम जान गइलीं
नहीं आदमी हरिजनवा हम जान गइलीं
बाबू के बुटवा तर भाई के मनवा
हम जान गइलीं
बाबू के बुटवा तर माई के मनवा
हम जान गइलीं
बाबू के बुटवा तर बहिना के मनवा
हम जान गइलीं
दबे चरने चरनवा हम जान गइलीं

● डी.पी.त्रिपाठी

हरिजनों पर अत्याचार के खिलाफ एक गीत। ●

रउरा शसना के बाटे ना जवाब

रउरा शसना के बाटे ना जवाब भाई जी।
रउरा कुरसी से झरेला गुलाब भाई जी।

राउर लइका त जाके विलायत पढ़ेला।
हमरा लइका का जुटे ना किताब भाई जी।

हो हमरा लइका का रोटिया पर नून नइखे।
रउरा चार्भी रोज मुरगा कबाब भाई जी।

रउरी बुढ़िया का गलवा में क्रीम लागेला।
हमारा नइकी के जर गइल भाग भाई जी।

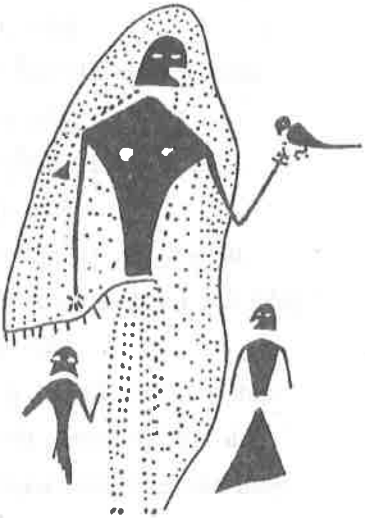

प्रचलित भोजपुरी लोक गीत। ●

सावन के महीने में

तरी नारी नारी मोर नाना री नानी
हो सावन के महीने में हरियर दीखे खेती के धान
हाबे सबके प्राण के आधार हो
सावन के महीने . . .

आसाढ़ महीना गिरगें पानी
बरसे करिया बादर हो - 2
ए मोर भुइयां महतारी हर
औढ़ी हरियर चादर हो - 2
खेले कूदे लइका झुमगे झुमगे सबो संसार हो
सावन के महीने . . .

रिम झिम रिम झिम गिरगे पानी
ओढ़े कमरा खुमरी नगरिया ओढ़े कमरा खुमरी
नागरला जोतत जोतत
गावे ददरिया ठुमरी नगरिया - 2
खेत खेत मा मनखे चहके सुघ्घर लागे खार हो
सावन के महीने . . .

खेत निंदइया टूटी टूटा
पीठ में ओढ़े मोरा हो
सुघ्घर ला लहरावे संगी
खेत के धान के रोपा हो
छल-छल-छल बोहगे पानी
भरगे खेत मोघा पार हो
सावन के महीने . . .

नवा अंजोर, छत्तीसगढ़, के सौजन्य से। छत्तीसगढ़ी गीत जिसमें सावन के महीने में हरे-भरे खेतों का चित्रण है। धान से खेत लहलहा रहे हैं। यह सब आसाढ़ में काले-काले बादलों की बरसात से संभव हुआ। धरती माता ने मानों हरी चादर ओढ़ ली हो। बच्चे-बूढ़े सब मस्ती में झूम रहे हैं। खेतों में हल जोतने वाले भी खुशी में ठुमरी गा रहे हैं। ●

बादर बनगे दानी

बादर बनगे दानी रे भइया आगे असाढ़ के पानी
भुइयां के भाग पलटगे रे भैया आगे बरखा रानी।

उमड़-घुमड़ के बदरा छाये
लप-लप बिजुरी लौकत आये
माटी महक-महक हरवाये
सन सन पवन चकोरत जाये
ओनहा कोनहा सवों भीज गये
चूहगे परबा छानी रे भैया।
आगे असाढ़ के पानी. . .

कर कर ओखि लइका जावें
बरसत पानी मां खेल जमावें
दाई दादाला देखि लुकावें
गोल-गोल घूमें चिल्लावें
ईत्ता-ईत्ता पानी घोर-घोर रानी,
ईत्ता ईत्ता पानी रे भैया।
आगे असाढ़ के पानी. . .

बईला नागर घरीस किसान
बीज भातल बोये सियान
चलिन सबोजन बोएला धान
बरसा लानिस नवा विहान
पानी दमोर दे नागर बइला जोर दे
नंगत दमोरिस पानी रे भैया।
आगे असाढ़ के पानी. . .

मध्यप्रदेश में छत्तीसगढ़ का गीत। इस गीत में बरसात के आगमन का वर्णन किया गया है। बरसात आने से किस तरह झोंपड़ियों में पानी टपकता है, किस तरह बच्चे नाचते-गाते हैं और किस तरह सयाने हल-बैल लेकर खेतों की तरफ निकल पड़ते हैं, इन बातों को इस गीत में दिखाया गया है।

हाय कहे कजरी

हाय कहे कजरी रस मांगे कजरी
रस मांगे हाय
देदे समुंद बांध मुंगवा कजरी रस मांगे रे।

अब के से टपके जबलपुर मा टपके
रामगढ़ मा गरजे समुन्दर में बरसे ओसी के
ओसी के भैया यां हरियरपानी ओसी के
भैया धीरे से।

धर के पछितवा सेमी भलनवा
मारे हुंकारी टोरे मुखारी सजनीन में
सजनीन में भैया सजे कवारा सजनीन में
भैया धीरे से।

ऐले हो नरवा पैले हो कुवां
शुरन ला भूख लगे मारत है जुवां बैठे-बैठे
बैठे-बैठे भैया भचीमा ला टोरे बैठे-बैठे
भैया धीरे से।

खटिया मा सोये खट किलवा चावे
सरकी मा सोये सरकत आवे धीरे-धीरे
धीरे-धीरे भैया ऐले दुवरिया धीरे-धीरे।

सास कुटे लाठा बहू मांगे बाटा
साकस गली में सैरया लगे डाटा धीरे-धीरे
धीरे-धीरे भैया ऐले दुवरिया धीरे-धीरे।

छत्तीसगढ़ी लोक गीत। ●

तू मालू न काटा मालू रे

पारो को भिड़ा को छै घस्यारी मालू रे
तू मालू न काटा मालू रे
मालू कोटियों पापो लागू छै
मालू रे तू मालू न काटा मालू रे।
पार भिड़ा की मैं छै घस्यारी
मालू रे तू मालू काटन दे मालू रे।
ये भोंसी कणी भेलो घुरेदे
त थोरी कणी गाड़ बगौदे
मालू रे तू मालू न काटा मालू रे।
भैंसी छै भागी मोकणी प्यारी
थोरी छै भागी दीदी को प्यारी
मालू रे तू मालू काटन दे मालू रे।
तेरी दीदी को केहयो नामा
तैको मरद के करो कामा
मालू रे तू मालू न काटा मालू रे।
दीदी का नामा राजदुलारी
धनसिं भीना तेरो अनाड़ी
मालू रे तू मालू काटन दे मालू रे।
मैं तैरो भीना तू मेरी साली
मालू रे तू मालू काट ले मालू रे।

कुमायूं लोकगीत। कहानी इस प्रकार है। एक घसियारी लड़की किसी पहाड़ी बगीचे में घास काटने जाती है। बगीचे का चौकीदार उसे घास काटने से मना करता है। घसियारी विनती करती है - यह कहकर कि उसकी दीदी के पास एक प्यारी भैंस है और उसके लिए घास चाहिए। आदमी के पूछने पर घसियारी बताती है कि उसकी दीदी का नाम राजदुलारी है, जीजा का नाम ध्यानसिंह है जो कि बहुत ही अनाड़ी है। चौकीदार बोला, 'तब तो मैं ही तेरा जीजा हूं। तू जितना मरजी घास काट ले।' ●

पैला जनम मा

फ्युलाड़ी त्वे देखि किं औंदिए मन मा
मेरो औंदिए मन मा
तेरो मेरो साथ छयो पैला जनम मा

डांड्यो मा दगड़्यो दगड़ घास को जब जांदी तू
छुण-छुण-छुण-छुण दत्थिका झुमका बज्योंदी तू
रोतेलो गीत लगौंदी छै मन मा
लगौंदी छै मन मा
तेरो मेरो साथ छयो पैला जनम मा

गैर की गांजली लेके जब कुटिण्यो जांदी तू
दयुराण्यों जिठण्यों दगड़ छुपका लगौंदी तू
धौपेलो फेर बतौंदी छै कमर मा
बतौंदी छै कमर मा
तेरो मेरो साथ छैयो पैला जनम मा

एक प्रचलित पहाड़ी लोकगीत। इस कविता में एक पहाड़ी कन्या 'फ्युलाड़ी' का वर्णन है।

बेडु पाको बारोमासा

बेडु पाको बारोमासा
ओ नारयण का फल पाको चैता मेरी छैला।

रुण-झूण दिन आयो
ओ नारयण पूजा मेरी मैता मेरी छैला।

आलमोड़ा का लाल बजारा
ओ नारयण लाल मटे के सीढ़ी मेरी छैला।

आप खांदी पान सुपारी
ओ नारयण मैं तो लौंदी बीड़ि मेरी छैला।

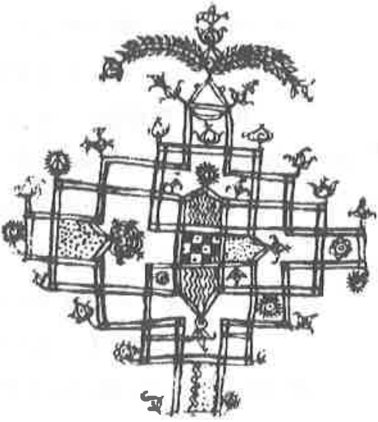

अल्मोड़ा का बहुत प्रचलित लोकगीत। इस गाने में उस इलाके के फल और प्रकृति के बारे में बताया गया है। ●

अंजन की सीटी में म्हारो मन डोले

अंजन की सीटी में म्हारो मन डोले
चाला-चाला रे डिलेवर गाड़ी हौले हौले
अंजन की सीटी. . .

बड़ी जोर सूं चाले पंखो
घूम रहयो जाने भंवरो
बैठ रेल में गाणा लागो यो जाटा को छोरो
चाला. . .

बड़ी जोर सूं चाले गाड़ी
देवे जोर की सीटी
बड़ी जोर सूं चाले गाड़ी
देवे जोर की सीटी
डब्बो-डब्बो घूम रहयो है टोप वालो टी टी
चाला. . .

नंदी भागे डूंगर भागे - 2
और भागे रे खेत
ढान्या री तो टोली भागे उड़े रेत ही रेत
चाला. . .

जयपुर से जद गाड़ी चाले - 2
मैं आ के थी बैठी
अस्यो जोर की झटक्यो जाग्यो मैं तो पड़गीं ऊंटी
चाला. . .

यह एक राजस्थानी गीत है। इस गीत में रेलगाड़ी की यात्रा का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया गया है। एक ग्रामीण बाला पहली बार रेलगाड़ी में सवार होती है। एकाएक गाड़ी चलने से वो चक्कर खाती है। टी.टी. काली टोपी पहनकर घूम रहा है। नदी नाले सब पीछे छूटते जा रहे हैं। ●

दोला हे दोला

दोला हे दोला - 4
आंका बांका पथे मोरा कांधे निए छूटे जाइ
राजा महाराजादेर दोला।
ओ आमादेर जीबनेर घामेभेज़ा शोरीरेर
बिनिमए पथ चले दोला।
हेंया ना - 4
हे दोला. . .

दोलार भीतोरे झलमल करे जे
शुन्दोर पोषाकेर शाज
आर फिरे फिरे देखी ताइ झिकमिक करे जे
माथाए रेशमेर ताज
हाए मोर छेलेटिर ऊलंगो शोरीरे
एकटु जामा नेइ खोला
दुचोखे जल एले मनटाके बेंधे जे
तबु ऊ बोए जाए दोला

जुगे जुगे छुटि मोरा कांधे निए दोलाटि
देहो भेंगे-भेंगे पड़े, ओ पड़े
ओ घुमे चोख ढुलु ढुलु राजामहाराजादेर
आमादेर घाम झोरे पड़े, ओ पड़े
उंचु ओइ पाहाड़े धीरे-धीरे उठे जाइ
भालो कोरे पाएपा मेला
हटात् कांधेर थेके पिछलिए जदि पड़े
आर दोला जाबेनाको तोला

दोला यानी पालकी। पालकी ढोने वाले यानी कहार। कहारों की मेहनत, परेशानी, गरीबी और दर्द को लेकर है ये गीत। मूल असमिया रचना (पारंपरिक) को बंगला में रूपान्तरित किया, भूपेन हज़ारिका ने। द्वन्द्वों का तीखापन उभरता है इस

(अगले पृष्ठ पर जारी)

शुन्दोइरा नाउयेर मांझी

ओरे ओहोरे शुन्दोइरा नाउयेर मांझी
कोन दीन छारिबारे नाउ
आमी ज़ेनो ज़ानी मांझी रे।

ओ मांझी रे
आमार बारी ज़ाइयो मांझी ओइनाउ बराबर
ओं मांझी, ओइनाउ बराबर
डालिम गाछेर छाउआय घेरा पूब दरोज़ा घर।

ओ मांझी रे
बोनेर ज़तो पोशू पाखी ज़ोराय ज़ोराय मेले
बिधीर दोषे आमार ज़ोरा लिक्खेनी कपाले रे।

पूर्वी बंगाल का गीत जिसमें मांझी को एक व्यक्ति अपने गांव भेजना चाहता है। वह बताता है कि उसका घर नदी के ठीक उस पार है। उसका घर पूरब दरवाज़े वाला और छायादार पेड़ से ढंका हुआ है। वह कहता है कि प्रकृति में हर जीव की जोड़ी होती है परंतु उसके भाग्य में अकेला रहना ही लिखा लगता है। ●

(पिछले पृष्ठ से)

गीत में। पालकी के अंदर सुसज्जित राजा, उठाने वाला कहार व उसका परिवार नंग-धड़ंग। पालकी में बैठे राजाजी नींद में, आराम से, ऊंघते हुए और कहार दिन-रात एक करके दुर्गम पथ पर पालकी को उठाए चलता रहता है। सवाल ये है कि अचानक एक दिन अगर ये पालकी, ये कन्धे का बोझ गिर जाए तो किसी के कन्धे पर किसी के वज़न वाली ये अन्यायपूर्ण व्यवस्था क्या फिर से स्थापित हो पाएगी? ●

कालो नदी के होबि पार

ओ मोदेर देशो बाशी रे
आए रे पोराण भाई, आए रे रोहीम भाई
कालो नोदी के होबि पार

एई देशेर माझे रे
पिशाच आने रे कालो बिभेदेर बान
शेई बाने भाशे रे मोदेर देशेर मान
फाराक नोदी रे, बांधबी जोदि रे
धर गांइती आर हाथियार
हेईआ हेइ हेईया मार
जोआन बांध शेतु एबार

एई नोदी तोमार आमार खूनेरि दरिया, हेईआ. . .
एई नोदी आछे मोदेर आंखि जले भोरिआ, हेईआ. . .
एई नोदी बहे मोदेर बूकेर पांजोर खुड़िआ, हेईआ. . .
मोरा बाहु बाड़ाई दुई परिते दुजोनाते मिलिया, हेईआ
ओरे एई नोदीर पांके पांके कुमीर लुकाय थाके
भांगे शुखेर घर, भांगे खामार, हेईआ. . .
हेयां होइ मार जोर, बांधि शेतु बांधि रे
बांधि शेतु बांधि रे - 4

बुकेते बुकेते शेतु अन्तरेरो माया दिए बांधिरे
कुटिलेर बाधा जतो घ्रिणार निष्ठुराघाते भांगी रे
शाम्मेर स्वदेश भूमि गड़ार शपथ निए बांधिरे

● सलिल चौधरी

सलिल चौधरी की इस बांग्ला रचना में सांप्रदायिकता के खिलाफ एकजुट होने को कहा गया है। ऐ मेरे देशवासियो इस देश में पिशाच दंगे-फसादों की बाढ़ ले आए हैं। यह नदी हम सब के खून से भरी है। इस नदी के ऊपर हमें भाईचारे के पुल का निर्माण करना है। ●

शोनार बांधाली नाउ

शोनार बांधाली नाउ, शोनार बांधाली नाउ
पितलेर घुरारे, पितलेर घुरा
ओ रनेर घुरा दौराइया ज़ाओ।

आरे बोइठा ना फैलाइते नाउये
शून्ये कोरे उरा, ओ भाई रे शून्ये कोरे उरा
आरे बोन्धुर देशे ज़ाईबार काले
कोइरो ताराहूरा, भाई रे कोइरो ताराहूरा
हेंइ हेंइ हेंइ हेंइया - 2
ओ रनेर घुरा दौराइया ज़ाओ।

नौका चले छलात छल, पानी उठे खलात खल
कोनबा देशे ज़ाइबार काले
पानी करे हाय
भाई रे पानी करे हाय
पिरीत रतन पिरीत जतन पिरीत गलार हार
भाई रे, पिरीत गलार हार
पिरीत कोइरा ज़े ज़न मरे शफल ज़नम तार
भाई रे, शफल ज़नम तार
हेंइ हेंइ हेंइ हेंइया - 2
ओ रनेर घुरा दौराइया ज़ाओ।

इस बांग्ला लोकगीत में खूबसूरत और तेज़ चलने वाली नाव की तारीफ की गई है। ●

ओ आलोर पथोजात्री

ओ आलोर पथोजात्री एजे रात्री एखाने थेमोना
ए बालुचरे आशार तरोनी तोमार जेनो बेन्धोना
आमी क्लान्तो जे तोबू हाल धरो
आमी रीक्त जे, शेइ शांत्वना
तबो छिन्न पाले, जय पताका
तुले शूर्जो तोरन दाओ हाना।

आहा बुक भेंगे भेंगे पथे नेमे शोनीतो कना
कतो जुग धोरे-धोरे कोरेछे तारा शुर्जो रचोना
आर कतो दूर ओइ मोहाना
एजे कुआशा, एजे छलोना
एई बंचनादीप पार होलेइ पाबे
जनो समूद्रेर ठीकाना।

आउभान, शोनो आउभान आशे माठघाट बोनो पेरीए
दूस्तर बाधा प्रस्तर ठेले बोन्यार मतो एगीए
जुगो शंचितो शुप्ती दिएछे शाड़ा
हिमगिरि शुनलोकी शुर्जेर इशारा
जात्रा शुरू उच्छल रोले दुर्बार बेगे तोटिनी
उत्ताल ताले उद्दाम नाचे मुक्तो शतो नोटीनी
एई शुधु शत्यजे नबो प्राने जेगेछे रनोशाज शेजेछे
अधिकार अर्जने
आउभान शोनो आउभान।

● सलिल चौधरी

इस गीत में उजाले की तलाश में चले लोगों को रात के अंधेरे के पार पहुंचने का आह्वान किया गया है। युगों से चला आ रहा यह संघर्ष अब समाप्त होने को है और लोग अपने अधिकारों को लेने के लिए तैयार हो गए हैं। उनका आह्वान हर तरफ सुनाई पड़ रहा है। ●

उज्जलो दिन डाके

ओई उज्जलो दिन डाके शप्नो रंगीन
छुटे आएरे लगोन बोंए जाएरें मिलन बिन
ओइतो तुलेछे तान
शोनो ओई आउभान
तारी शुरे शुरे बाजे गुरू गुरू
होक गाने गाने पथो चला शुरू
आजी अंतरे अंतरे, प्रांतरे प्रांतरे
कण्ठे छड़ाबो शेई गान।

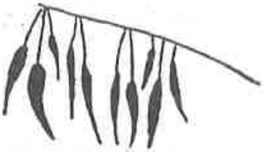

आए आएरे छुटे आए बांधन टुटे
आन मुकतो आलोर बोन्या
आए शुप्ती जागाइ, आए शान्ती भांगाई
एइ श्यामोलो धरोनी हबे धोन्या
आज आकाशे बाताशे दोला लागलो
आज जीवने जोआर बुझी जागलो
नबो उच्छलो उच्छाशे उद्दाम उल्लाशे
कण्ठे जागाबो शेइ गान।

इप्टा का बांग्ला गीत जिसमें नए युग के आने की बात कही गई है। नया दिन रंगीन सपनों को बुला रहा है। दिलों में, रास्तों में एक ही क्रांतिकारी गीत बजेगा। बंधन टूटेंगे, मुक्ति आएगी और धरती आकाश सब उल्लास से भर जाएंगे। ●

आकाशो लाल

आकाशो लाल, शागोरो लाल
लाल माटीर कोलीजा लाल
शूर्जो लाल, आगुनो लाल, रक्तो लाल
निशानो लाल, झंडा लाल - 3

आज ओतीत इतिहाश खुले जोदी दाओ दृष्टि
देखो कादेर रक्तो दिए एई लाल पताकार सृष्टि
मजदूरेर खुने जन्मो नियेछे ए निशान
ताइ रक्तो पताका हाते किशानमोजुर शाथे
चौलेछी जयेर पथे माभैं माभैं
एई उज्जलो लाल पताका
शोहीदेर रक्ते आंका, जलोंतो बन्हिशिखा
चीरो शोत्रुर जबोनीका
शेलाम तोमाय पताका
आज बींश शताब्दीर जाग्रोतो जनोतार चापे
एई रक्तो पताका देखे दुनियार दुश्मन कांपे
शयतानेर शोषन एबार हबे अबोशान
ताइ रक्तो पताका. . .
हेइआ हो हो हेंइयो - 3

बांग्ला जनसंगीत जिसमें लाल झंडे का गौरव गान किया गया है। आकाश, धरती, सागर सब लाल हैं। लाल झंडा भी हज़ारों वर्षों की मज़दूरों की मेहनत और खून से निकला है। बीसवीं सदी में किसान-मज़दूर जब अपनी पताका लेकर आगे बढ़ रहे हैं तो दुश्मन कांप रहा है क्योंकि शोषण का हमेशा के लिए अन्त होने वाला है। ●

बाईयोरे नाउ बाइयो

ओ माझी भाइयो, बाईयोरे नाउ बाइयो
खरो नोदीर ओपारे शपनेरो देशे जाइओ
हेइआ हो, आकाशे आज बादोल बड़ो भारी
हेइआ, ढेउयेर ताले तुफान नाचे मरन महामारी
हेइआ हो, बल मा भोइ जाबोइ खरो नोदीर पारे।

के बेन्धेछे मायारो घर भूलेर बालूचरे,
निभेछे कार आशार प्रोदीप कुशुम गेछे झोरे
आहारे, एबार भांगा पांजोर शपोथ शीखाय जालो
आनो आरो आलो।
हेइआ हो, बल मा भोइ. . .

महाकालेर खरो स्रोते आशार तरी भाशे
जीबन नाये धरोना हाल मरोन जदी आशे
आहारे, तोलो छेंड़ा पाले जयेरो पताका
आशार रंगे आंका।
हेइआ हो. . .

● सलिल चौधरी

इस गीत में नाविक को नाव नदी के पार ले जाने के लिए कहा जा रहा है। जहां सपनों का देश है। आज चारों ओर तूफान मचा है, बहुत-सी बाधाएं हैं लेकिन हमें आशा का दीपक जलाए रखना है। हमें आशा से रंगे हुए रंग वाली पताका को फहराना है। ●

हेइ सम्भालो धान हो

हेइ सम्भालो - 3 धान हो
कास्तेटा दाओ शान हो
जान कोबुल आर मान कोबुल
आर देबोना आर देबोना रक्ते बोना धान
मोदोरे प्रान हो।

चीनी तोमाय चीनी गो
जानी तोमाय जानी गो
शादा हातीर काला माहूत तुमी ना
जान कोबुल आर मान कोबुल
आर देबोना आर देबोना रक्ते बोना धान
मोदोरे प्रान हो।

पन्चाशे लाख प्रान दिसी, मा बोनेदेर मान दिसी
कालो बाज़ार आलो करो तुमीना
जान कोबुल. . .

ओ मोरा तुलबो ना धान परेर गोलाय
मोरबो ना आर खुधार जालाय मोरबो ना
तार जमींजे लांगल चालाइ ढेर
शोयेछी आरतो मोरा शोइबोना
एइ लांगल धरा कड़ा हातेर शपोथ भूलोना
जान कोबुल. . .

● सलिल चौधरी

1946 में बंगाल के कुछ जिलों में किसानों द्वारा एक शक्तिशाली आंदोलन छेड़ा गया। इसे तेभागा आंदोलन कहा जाता है। किसानों की मांग थी कि उनको पैदावार का दो तिहाई हिस्सा दिया जाए। इसी आंदोलन के दौरान सलिल चौधरी द्वारा लिखित है यह गीत। अब किसान मालिकों को धान नहीं देंगे। ज़मींदार तो सफेद हाथी पर बैठे काले महावत की तरह हैं जो काले बाज़ार की रोशनी बढ़ाते हैं। किसान ज़मींदारों के यहां हल चलाकर जो अत्याचार सहते आए हैं वह अब खत्म हो जाएगा। ●

गंगा बहिछो कैनो

बीश्तीर्नो दूपारेर अशंख्य मानुषेर
हाहाकार शुनेओ निशब्दे नीरबे
ओ गंगा तुमि, ओ गंगा बहिछो कैनो
नैतिकोतार स्खलन देखेओ, मानबतार पतन देखेओ

निर्लज्ज अलश भाबे बईछो कैनो
शहश्र बरशार उन्मादनार मंत्र दिए लोख्यो जनेरे
शबल शंग्रामी आर अग्रोगामी कोरे तोलना कैनो
ग्यानों बिहीन निरक्षरेर खाद्य बिहीन नागरिकेर
नेत्रित्वो बिहीनताए मौनो कैनो।
बीश्तीर्नो. . .

ब्यक्ति जोदि ब्यक्ति केन्द्रीक
शमष्टि जोदि ब्यक्तित्व रोहित
तबे शिथिल शमाज के भांगोना कैनो
शहश्र. . .

श्रोतश्विनी कैनो नाही बओ
तुमि निश्चय जान्होबी नओ
ताहले प्रेरणा दाओना कैनो
उन्मत्तधारार कुरुक्षेत्रेर शरशोज्याके आलिंगन करा
लक्ख कोटि भारत बाशीके जागालेना कैनो

● पॉल रॉबसन

पॉल रॉबसन के मूल गीत में अमरीका की प्रमुख नदी मिसिसिपी को संबोधित किया गया है। भूपेन हज़ारिका ने मिसिसिपी की जगह गंगा नदी का संबोधन डाल कर गाने का बांग्ला रूपांतर किया है। इसमें गंगा को शोषित जनता की व्यथा सुनाई जा रही है।
कवि सवाल करता है कि ढलती मानवता, गिरती नैतिकता और गरीब जनता पर ढाए जाने वाले तमाम अकथनीय अन्याय के बावजूद तू चुप कैसे है? हमारी अपेक्षा है कि तुम अपनी ज़िम्मेदारी निभाओगी, प्रेरणा का स्रोत बनोगी व हज़ारों-लाखों भारतवासियों को अन्याय के खिलाफ जाग उठने की प्रेरणा दोगी। ●

जो हिल बेंचे आछे

काल राते जो हिल के शप्ने देखेछि
जो हिल बेंचे आछे आमार मोतइ
आमि बोली जो तुमि बहुकाल मृतो
आमार मृत्यु हएनि, जो बोललो
आमार मृत्यु हएनि

शिअरेर पाशे खाड़ा जो के बोललाम
सॉल्ट लेके मारा गेछो तूमि निश्चित
फांशालो तोमाके ओरा खुनेर दाए
जो बले मोरिनि आमि
जो बले मोरिनि आमि

तोमाय तामाखोनिर मालीकेरा खून कोरेछे
ओरा गुलि कोरे मारलो तोमाय
बोंदुके मारा जाए मानुष शेराई
आमार मृत्यु होएनि, जो बोललो
आमार मृत्यु हएनि

(अगले पृष्ठ पर जारी)

जोहिल-जोहिल आमि मृत्युन्जयी
जो हिल कखोनो मरेना
जेखानेइ मजदूर स्ट्राइके शामिल
शेखानेइ थाकबे जो हिल
आज दिके-दिके गोड़छे मिछिल

साण्डियागो थेके मेइनअंचल
प्रतिखोनि गह्वर थेके मिल
जेखानेइ मजदूर गोड़छे लड़ाइ
शेखानेइ थाकबे जो हिल
आज दिके-दिके गोड़छे मिछिल

● पॉल रॉबसन
● अनुवाद - हेमंगो बिस्वास

'जो हिल' क्रांतिकारी मज़दूर आंदोलनों के लिए गीत लिखता था। गलत इल्ज़ाम लगाकर उसे फांसी दे दी गई। उसी की याद में यह गीत लिखा गया। एक लड़ाकू मज़दूर यह सपना देखता है कि 'जो हिल' वापस आ गया है। आज 'सान-दिआगो' से 'मेन' क्षेत्र तक हर खदान और मिल में जहां मज़दूर लड़ाई लड़ रहे हैं, वहां 'जो हिल' मौजूद है। ●

लालन की जात

शब लोके कये लालन की जात ए संसारे - 2
लालन बले जातेर की रूप देखलाम ना ए नजरे
शब लोके. . .

केउ माला केउ तज्बी गले
ताई तोर जात भिन्न बले
लालन बले जातेर की रूप
देखलाम ना ए नजरे
शब लोक. . .

सुन्नत दिले हए मुसलमान
नारीर तबे की हए बिधान
बामोन चिने पोइतेर प्रमाण
ब्राह्मणी चिनेन की प्रकारे
शब लोके. . .

जगत जुड़े जातेर कथा
लोके गल्प करे जथा-तथा
लालन बले जातेर फतना
डुबिएछी शब बाजारे
शब लोके कये लालन. . .

● **लालन फकीर**

लालन फकीर बंगाल के जनकवि थे - उनकी तुलना कबीर से की जाती है। वे ब्राह्मण परिवार में जन्मे थे। बाद में एक मुसलमान परिवार ने उनकी परवरिश की। सब लोग कहते हैं कि लालन की जात क्या है? जात का रूप क्या होता है, उन्हें नहीं मालूम। कोई माला पहन लेता है तो अपनी जात अलग बताता है - ब्राह्मण को तो जनेऊ से पहचाना जाता है लेकिन ब्राह्मणी को कैसे पहचाना जाए? इसीलिए लालन ने जात को फेंक दिया है। ●

मेघे गिरगिर कौरे

मेघे गिरगिर कौरे, आहा हिर-हिर मेघे कौरे
बा लागि आगलति कलापात लौरे
मेघे गिरगिर. . .

ए जाक जेन बरषून आहों-आहों कौरे
मेघे गिरगिर. . .

बहुदिन शन पर मोर गॉओर माटि दौरा
शाह करि सेऊज़ करिम आनन्दे नधरे
मेघे गिरगिर. . .

धार नलओं ऋण निदिओं सूतो निदिओं आरु
महाजनर निठुर बूधि, सहो केलोय बारू
मेघे गिरगिर. . .

बहूतो जे घाम सेरालों, तेजो बुकुर बहुदिलों
कांचिखनत शान दिलों, शाहश भरि परे
मेघे गिरगिर. . .

असमिया लोकगीत। बादल गरज रहे हैं, बारिश होने वाली है, हवा में पत्ते हिल रहे हैं। बहुत दिनों से बेकार पड़ी अपने गांव की ज़मीन में खेती करके एक बार फिर हरा-भरा कर दूंगा उसे।

अब आगे से न तो किसीसे उधार लूंगा और न किसीको सूद दूंगा। महाजन के जाल में अब नहीं फंसूंगा। इतने दिन बहुत पसीना बहाया, खून भी बहाया। अब और ऐसा नहीं होने दूंगा। अपनी दराती की धार को तेज़ कर रहा हूं। ऐसा करते-करते मन साहस से भर जाता है। ●

आसाम देसे रे मैनी

चल मेनि आसाम जाबो देसे बड़ो दुख रे
आसाम देसे रे मेनी चाबागान हरियाल।

कोरमारा जेमोन तेमोन पातितोला टान रे
हाए जोदुराम, फांकिदिया पठाइलि आसाम।
चल मेनि. . .

छौआं कांदे टिहिर टिहिर गागोरी में पानी लाई
बाप दादा रे बांछा मुरली बजाए।
चल मेनि. . .

सर्दार बोले काम काम, बाबु बोले धोइरे आन
साहेब बोले लिबो पिठेर चाम
हाए जोदुराम, फांकिदिया पठाइलि आसाम।

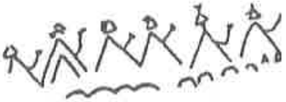

असमिया चाय बागानों के मज़दूरों का गीत। बिहार, उड़ीसा, आसाम और अन्य क्षेत्र से दलालों के ज़रिये चाय बागान में मज़दूर लाए जाते हैं। इसी ज़िन्दगी का वर्णन किया गया है – चाय बागान की बोली में। ●

ए भरा चांदनी रे

महुलो महके लो मन मोर छनके लो
एका मोर मनेर फांके तो लागि पीरीत जागे
ए भरा चांदनी रे – 4
धीताम ताम ताम धिताम धिताम धीताम
ताम धिताम ताम

दूरे-दूरे रहि रहि
बोंइसीर सूरे – 3
थिरी थिरी थिरी डाके किए
पराणो मितरे – 3
कांउरी घेरा काकर राती
उलसि उठे कुंवारी छाती।
धिताम ताम . . .

सिरि सिरि सिरि बाआ बहे
पाहाडर तले – 3
अमानिया मन नाचे
मादलर ताले – 3
कांउरी घेरा कांकन राती
उलसि उठे कुंवारी छाती।
धिताम ताम . . .

एक पहाड़ी इलाके में चांदनी रात, महुआ की महक, सन-सन पवन, मादल और बांसुरी का मादक स्वर। ऐसे में एक कुंवारी के हृदय पर क्या बीतती है? ●

मजदुर भाई साज रे

साज साज साज रे मजदुर भाई साज रे
अनाहार अत्याचार डाक दिए आज रे
भांगिलाणि कारागार लंघी पाराबार रे
दिगु दिगु माडिआसे बिप्लब जुआर रे
टलमल कंपिलाणि अत्याचारी राज रे।

एक सत्रु एक लख्य एक आम बाण रे
कोटि चासि मुलिआर एक हि निसान रे
एकतार मुक्ति मंत्रे तोल नुआ ताज रे।

लख्य कोटि बख्ये जले मुकति मसाल रे
पराधीनतार सब समसाने जाल रे
साणित क्रुपाण तोर सत्रु रकते साज रे।

रकते रकते गर्जु आजि बिप्लब बतास रे
सोसणर छाति चिरि आगामी हुतास रे
जाग जाग डाके सत संग्राम आबाज रे।

इस उड़िया जनगीत में मज़दूर और किसान, भूखों और पीड़ितों को आह्वान किया गया है। वक्त आ गया है कि गरीब और पीड़ित समुदाय अपना दुश्मन पहचाने। सामान्य लोग शोषक वर्ग का दुश्चक्र समझने लगे हैं। ●

चलिबनि आउ

चलिबनि आउ चलिबनि, तुम बड़लोकि चलिबनि
आमरि रकत मांउस हाडरे तुम बाबूगिरि चलिबनि।

आमे सफाकलु घन जंगल
गढि देलु खेत माल कु माल
आम जमि आमे दखल करिबु तुम जमिदारी रहिबनि।

सहि खरा सीत बरसा राति
आमे फलाइलु फसल छाति
आमरि दरब आमे नेइजिबु तुम खमाररे भरिबुनि
जुग जुग धरि बेठि खटाई पिठिकु मारिल पेटे न देइ
आम सुना रूपा घर बाडि बंधा
तुमे आउ लुटि पारिबनि।

कसण सोसण सबु सहिछु
तुम जुग कथा मने रखिछु
पाटि फिटाइले पिठिं फटाइब
आम जुगे होइ पारिबनि।

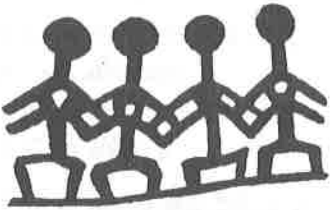

इस उड़िया जनगीत में ज़मींदार के खिलाफ आवाज़ उठाई गई है।

बाजि गलान ढुल मुहुरी रे

बाजि गलान ढुल मुहुरी रे
बाजि गलान रे, बाजि गलान ढुल मुहुरी
पिला दितर मोर फुल गजरा रे
बाजि गलान रे, बाजि गलान ढुल मुहुरी

जाऊ छें छाड़ि रे, बाजि गलान . . .
कियें कोरीथिला निआलि ताके रे
किये कोरीथिला बऊल . . .
कार हेइथिला आंखिर कुटा
कार हेइथिला कजल
कार हेइथिला मनर गहोकि कार जपामालि रे . . .
बाजि गलान रे बाजी गलान ढुल मुहुरी

केन गां थी बोहू हेबाजाई
ई गां थी थिला झी
सेन नाइ मिले बासिबुसा मुठे
ईन खाउथिला घी
कुल गोत भी बदलि जीबा
समकू पर करि रे
बाजि गलान रे, बाजि गलान ढुल मुहुरी

बर पिला मागे घड़ी साईकिल
बुआ दिए मुड़े हात
केन पाएवा हजार-हजार
घरे नाइन भात
झी जनम करि पाप करेबुआ
पुओ गुर हांडी रे . . .
बाजि गलान रे, बाजि गलान ढुल मुहुरी

सम्बलपुरी लोकगीत। इसमें शादी संपन्न होने की धुन बज रही है। विदाई के समय का करुण दृश्य चित्रित किया गया है सम्बलपुर के इस गीत में।

भूमि कोसम भुक्ति कोसम

भूमि कोसम भुक्ति कोसम
सागे रैतुल पोराटम
अनंत जीवित संग्रामम
राजुलु मारी रोजुलु मारी
पालन चेसे पद्धति मारी
मारनिदोकटेरा अदि दुन्ने रैतुल ब्रतुकेरा।
भूमि कोसम . . .

सम्पदा पेंचे तीरुलु मारी
पंपकाललो रीतुलु मारी
मारनिदोकंटेरा अदि पेदल आकलि मन्टेरा।
भूमि कोसम . . .

तुरुपु दिक्कुन वीचे गाली
पडमटि कडलिनि पिलिचे गाली
तुरुपु पडंमरलेकम चेसे
तुफानुला चलरेगे दाका
अंतम कादिदि आरम्भम्।
भूमि कोसम . . .

● **श्री श्री**

श्री श्री (1910-1983) तेलुगु में प्रगतिशील और क्रांतिकारी लेखन के प्रणेता थे। उन्होंने चालीस के दशक में अरसम और 1970 में विरसम (विप्लव रचयता संघम) की स्थापना की।

इस गीत में कहा गया है कि ज़मीन और पेट के लिए भूमिहीन किसानों की लड़ाई तो अंतहीन है। समाज में सब कुछ बदल गया है पर एक किसान की ज़िन्दगी अभी भी वैसी की वैसी ही है। पर फिर भी आशा है कि ये संघर्ष जारी रहेगा जब तक पूर्व से आने वाली हवाएं और पश्चिमी समुद्र का पानी मिलकर एक भयंकर तूफान न खड़ा कर दें। ●

रेला रे . . .

रेला रे . . .
झुंबकु झुंबकु झुंबकु बाला
झुंबकु झुंबकु झुंब
अड़वी तल्ली की दंडा लो . . . मां
तल्ली अड़वी की दंडा लो . . .

अड़वी सल्ला गुण्टे
अन्नानिकी कोदवे लेदू
पण्टा लिनटी कोस्ते
पंडूगा चेदामू . . .

कोण्डल नुण्डी कोनल नुण्डी
गोदारम्मा परुगुलु चूडु
वम्पुलु तिरुगुतु वैयारंगा
पेनु गंगम्मा उरुकुलु चूडु
एटीलो ऊट चूडु
सेलिमिलो सेगलु चूडु
जीवनदुलतो चुट्टु मुट्टिना
गोण्डोल्ल जीव गड्डरा बाबू
रेला, रेला, रेला, रेला, रेला, रेला रे

को को को अंटू, कोकिलम्मा पाटा
किल किल किल किल किल किल
राम चिलुक पलुकू
पावुराला जण्ट चूडु, पाला पिट्ट पाटा विनू
पट्ट पुरूगू पुट्ट चूडु, तेने टिगा तेट्टा चूडु
अन्दरि की अण्डग निलिचे
अड़वी तल्ली अंदम चूडु
रेला . . .

(अगले पृष्ठ पर जारी)

बण्डलु ढिकोनि कोण्डलू मिंगे
कोण्ड चिलवाला कोरलु चूडु
बुसलु कोट्टचू विषमुगकेड़ी
ताचु पामुला चूपुलु चूडु
नागुपामु पड़िगे चूडु
कटलापामु कटलु चूडु
मनुषुलु, पामुलु कलिसी बत्तीकेड़ी
अडवी तल्ली गुण्डे चूडु
रेला . . .

भीम देवरा गाली देवरा
जंगू बायम्मा तल्ली मायम्मा
पिल्ला जल्ला सल्लंगुं चु
जंगू बायम्मा तल्ली मायम्मा
इप्प पूला सारा तेच्ची
साका पेड़ा तामेतल्ली
कोरूकुन्ना कोड़िपुंजुनू तेच्ची
कोसी हारमिस्तामे तल्ली
रेला . . .

● गदर

यह गीत गदर द्वारा रचित है जिन्होंने 1972 में जन नाट्य मंडली की स्थापना की। इन बीस वर्षों में जन नाट्य मंडली लगातार, लोगों के संघर्षों के पक्ष में अपनी आवाज़ उठाती रही है।
इस गीत नाटिका में आदिलाबाद के गोंड आदिवासियों के ज़मींदारों, पुलिस, फॉरेस्ट के अधिकारियों और सूदखोरों द्वारा किए जाने वाले शोषण का चित्रण है। आदिवासी धुन पर आधारित यह गीत आदिवासियों और कुदरत के रिश्तों का विस्तृत विवरण देता है। प्रथम पैरा में जंगल, दूसरे में नदियों, तीसरे में जीव जंतुओं और अंतिम पैरा में जंगल से जुड़ी प्राकृतिक शक्तिओं की अर्चना की गई है। ●

संदामामा

नोमी नो मन्नालो नो मन्नानालो संदामामा
ऊरुकु, पोलिमेरा तीरामंदून्ना संदामामा

एरुपूसिनोड़ा पोराड़ारारा संदामामा
नोमी . . .

इन्नालु इन्नेलू मन्नूला मन्ने संदामामा
पोडूलु बीडूलू बुन्नावु राइता संदामामा
नोमी . . .

तड़िलेनि नीगोन्तू गेंजडुगूतुन्ना संदामामा
पाणाबट्टि नुवु तारि गोट्टावु संदामामा
नोमी . . .

अलसि पुलीसीना गुण्डे अन्ना मंटुन्ना संदामामा
माड़िना निकडुपु किड़ किड़ मण्टुन्ना संदामामा
नरमुले तेम्पावू नारु नाटावु संदामामा
कन्नीरे पोसावु कलुपु तीसावु संदामामा
नोमी . . .

रेइलो नीकल्लू दीपालु चेसी संदामामा
सेलु पाण्टालन्नि कापाला कासवु संदामामा
नोमी . . .

नीसेवटानी नेत्तुरु दारा केसावु संदामामा
कोसिमोसि सेनी रासि पोसावु संदामामा
वुसोमि नायेला रासि सुसाडु संदामामा
ताताला सोत्तानी राता सूपिंची संदामामा
नोमी . . .

(अगले पृष्ठ पर जारी)

पालु पम्पाकालु बाकीलु पोनु संदामामा
नेकेन्नु गिंजातो नागि पिकेड़ो संदामामा
नोमी . . .

गादे गरिसे निम्पी ओदा सूपिन्वी संदामामा
पाइसा गारिसे निम्पि ओदा सुपिन्वि संदामामा
पाइसा परकित्ताड्डु नेत्तुरुने पिण्डी संदामामा
नोमी . . .

नेत्तुरुनिचिना मानामु नेतुरु सुड़ाली संदामामा

नोमी . . .

बतुकुलु पेट्टिना मनामु बतुकुटा सुड़ालि संदामामा

● वंगापांडू प्रसाद

जन नाट्य मंडली के एक कवि वंगापांडू प्रसाद ने इस गीत को मशहूर 'चंदामामा' की धुन पर लिखा है। खेतीहर मज़दूर किस तरह से कष्ट और पीड़ा में से गुज़रता है और आखिरकार उससे उसकी मेहनत का फल भी ज़मींदार छीन लेता है। कभी-न-कभी तो ऐसा दिन आएगा जब मज़दूर अपनी मेहनत की कमाई को अपने ही पास रख पाएगा। ●

कोण्डलू पगलेसिनम

कोण्डलू पगलेसिनम, बण्डलनू पिण्डीनम्
मानेत्तुरे कंकरगा प्रोजेक्टुलू कट्टिनम्
श्रम एवड़ीदिरो, सीरी एवड़ीदिरो
कोण्डलू पगलेसिनम . . .

बंजरलनू नरकिनम पोलालनू दुन्निनम
मा चमटे कालूवगा पंटलू पंडिन्चिनम्
गिंजे वड़िदिरो गंजे वड़िदिरो
कोण्डलू पगलेसिनम . . .

मग्गालनु पेट्टिनम् पोगु पोगु वड़िकिनम्
मानराले दारालुग बट्टलेन्नों नेसिनम्
उडुके वड़दिरो वणुके वड़िदिरो
कोण्डलू पगलेसिनम . . .

यंत्रालनु तिप्पिनम उत्पत्तुलु पेन्चिनम्
मा शक्ते विद्युत्युग फैक्टरिलु नड़िपिनम
मेड़े वड़िदिरो गुड़िसे वड़िदिरो
कोण्डलू पगलेसिनम . . .

कारणालु तेलिसिनम आयुधालु पट्टिनम्
मा युद्धं आपकुण्ड़ विप्लवालु नड़िपेदम
चावु मीदिरो गेलुपु मादिरो
कोण्डलू पगलेसिनम . . .

● **चेराबण्डा राजू**

मेहनतकशों की ज़िन्दगी और मांगों पर आधारित चेराबंडा राजू की एक तेलुगु रचना। चेराबंडा राजू, भास्कर रेड्डी का साहित्यिक नाम है। उन्होंने तेलुगु साहित्य में कविता लिखने की एक नई परंपरा शुरू की। समाज के गिरते हुए मूल्यों और पारंपरिक ढांचे में निहित शोषण को इन कविताओं का विषय बनाया गया तथा यह बताया गया कि बिना आमूल परिवर्तन के गरीबों की हालत ठीक नहीं हो सकती। कविता में जिन शब्दों

(अगले पृष्ठ पर जारी)

मुलके नाहि मिले काम

मुलके नाहि मिले काम
कैसे बांचे प्रान बांचे प्रान
सांझे काले बिहाने होए टान

परेर घरे पर खाटालि
सकाल होले खाइबा गाली रे
खाटे खाटे... पिठे बहे घाम
कैसे बांचे प्राण . . .

नवा घरे कुटुम आइलो
खावा दावा सारे गैलो रे
माड़ भाते... राखली मान
कैसे बांचे प्राण . . .

जाइछिलो घुड़िबड़ि
ताईलिलो महाजने रे
आड़ बैसे... झुड़त नयान
कैसे बांचे प्राण . . .

पूर्वी भारत में झुमूर गीत एक लोक परम्परा है। छोटा नागपुर इलाके के इस झुमूर गीत में साधारण लोगों की दुरावस्था का वर्णन किया गया है। गांव में काम नहीं मिलता। दूसरों के घर काम करना पड़ता है। सुबह उठते ही गालियां सुननी पड़ती हैं। काम करते-करते पीठ से पसीना निकल रहा है। सब कुछ महाजनों ने ले लिया है। पता नहीं ज़िन्दगी कैसे चलेगी।●

(पिछले पृष्ठ से)

का चयन किया गया वे भी पुरानी परंपरा में साहित्य विरोधी माने जाते थे। इस गीत में मज़दूरों के शोषण का वर्णन किया गया है तथा यह बताया गया है कि वे अब इस बात को समझ गए हैं और मुक्ति के लिए प्रयास कर रहे हैं। अब उनकी जीत निश्चित है।●

चाल कांध हातुरे जनम लेनम बिरीसा

चाल कांध हातुरे जनम लेनम बिरीसा
डुम्बारी बुरुरे लोड़ाई के नाम बिरीसा
लोड़ाई के नाम अबुआ
दिसुम नातिनते
गोए जनम जेल रे . . .

नागपुर दिसम दो अबु आगे ताना
बुरु टोंडा ओते आसा अबु आगे ताना
ओंडो मिसा जनम लेन बिरीसा हो . . .
आम गिले दारा ताना - 2
चाल कांध . . .

सोना रूपा हीरा चांदी अबु आगे तोइकेन
सुसुन दुरुंग शुकुर शिंका अबु आगे ताना
ओंडु मिसा ओमालेन बिरीसा हो . . .
आम गिले कोए ताना . . .

छोटा नागपुर इलाके में मुंडा आदिवासियों के बीच एक अमर नाम है बिरसा (1874-1900) रांची और सिंहभूम के इलाके में अंग्रेज़ों के शासनकाल में भयानक शोषण हुआ। कबीले जो कि सामूहिक रूप से ज़मीन के मालिक होते थे, जागीरदारों और ठेकेदारों के चंगुल में फंस गए। अब उन्हें अपनी ही ज़मीन पर बेगारी करनी पड़ रही थी। इसके खिलाफ आवाज़ उठाई बिरसा मुंडा ने। उसने एक आंदोलन चलाया तथा इन इलाकों से सभी बाहरी शोषकों को उखाड़ फेंकने की कोशिश की। इस सशस्त्र विद्रोह को अंग्रेज़ों ने दबा दिया और जेल में बिरसा की मृत्यु हो गई। बिरसा के बारे में आज भी मुंडा गीत काफी लोकप्रिय हैं। इस गीत में बिरसा के जन्म और संघर्ष को याद किया गया है और उससे यह प्रार्थना की गई है कि वह फिर से जनम लेकर उन्हें नेतृत्व प्रदान करे।

बिरसा का जन्म चाल कांध गांव में हुआ था और बिरसा ने डुम्बारी पहाड़ से लड़ाई का ऐलान किया था। इन दोनों जगहों का ज़िक्र गीत की पहली पंक्ति में किया गया है। ●

9 788187 171102

मूल्य: ₹ 22.00